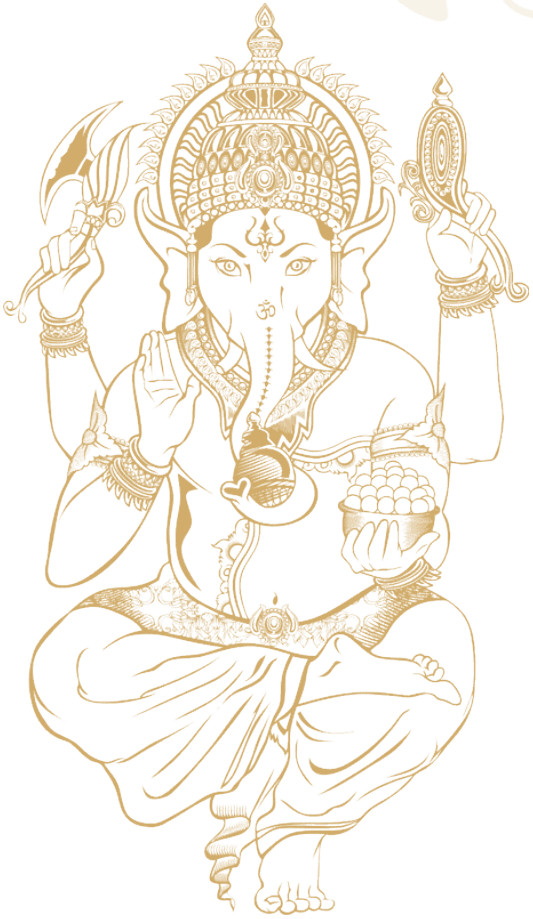

Miss. Baby Chouhan

08 Feb 2026

05:22 AM

Indore

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121210501

तिथि 08/02/2026 **समय** 05:22:00 **वार** रविवार **स्थान** Indore **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:25
अक्षांश 22:42:00 उत्तर **रेखांश** 75:54:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	14:08:02 घं
वेलान्तर	00:14:10 घं
सूर्योदय	07:03:18 घं
सूर्यास्त	18:18:01 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	फाल्गुन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	7
नक्षत्र	स्वाति
योग	गण्ड
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रु-रूपा
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	शुक्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी
राहु 16वर्ष 0मा 9दि
राहु
08/02/2026
17/02/2042

राहु	31/10/2026
गुरु	25/03/2029
शनि	30/01/2032
बुध	18/08/2034
केतु	06/09/2035
शुक्र	06/09/2038
सूर्य	31/07/2039
चन्द्र	29/01/2041
मंगल	17/02/2042

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 9मा 11दि
पिंगला
08/02/2026
20/11/2027

	08/02/2026
धान्या	01/03/2026
भ्रामरी	21/05/2026
भद्रिका	31/08/2026
उल्का	30/12/2026
सिद्धा	21/05/2027
संकटा	31/10/2027
मंगला	20/11/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			26:27:01	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	केतु	---	0:00			
सूर्य			24:59:29	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	राहु	शत्रु राशि	1.20	आत्मा	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			08:07:47	तुला	स्वाति	1	राहु	राहु	सम राशि	0.84	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	17:59:13	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	उच्च राशि	1.30	भ्रातृ	भ्रातृ	मित्र
बुध			07:36:13	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	सम राशि	0.94	पुत्र	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		22:24:39	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.39	अमात्य	धन	सम्पत
शुक्र			02:43:31	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	शुक्र	मित्र राशि	1.08	कलत्र	कलत्र	अतिमित्र
शनि			05:07:45	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	1.40	ज्ञाति	आयु	विपत
राहु			14:53:52	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु			14:53:52	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

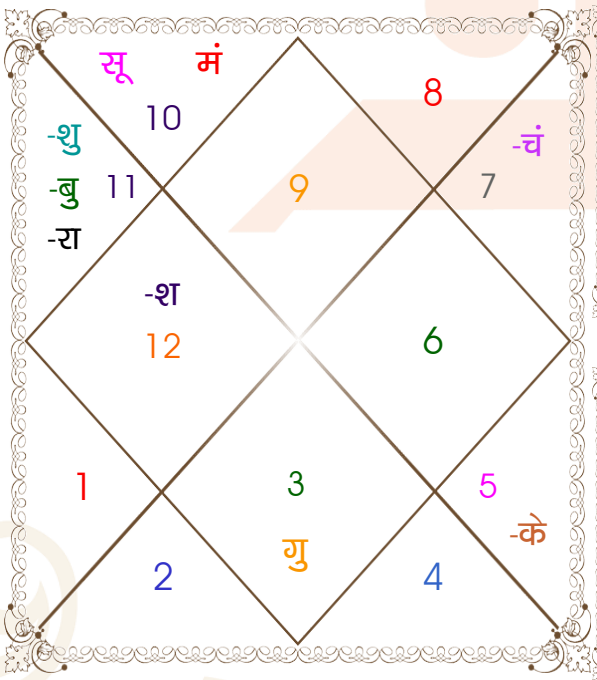

चन्द्र कुंडली

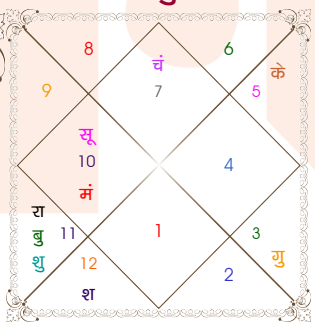

नवमांश कुंडली

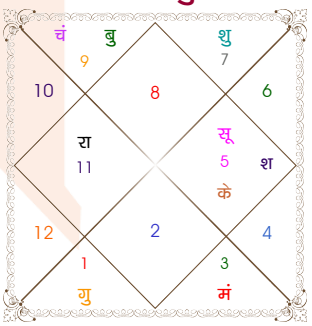

सर्वाष्टकवर्ग

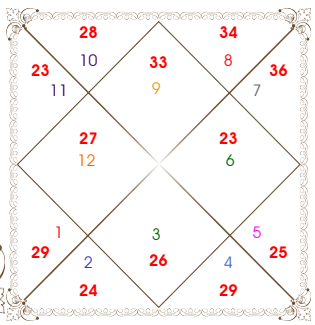

दशमांश कुंडली

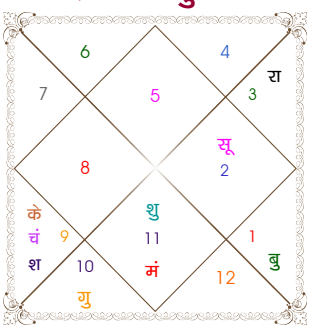

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

नक्षत्रफल

आप स्वाती नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप की जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि महिष, वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, गण देव तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "रू" से प्रारम्भ होगा यथा रूपा, रूक्मणी ।

आप स्वभाव से ही सहनशील रहेंगी तथा दुःखों एवं क्लेशों को सहन करने में पूर्ण रूपेण समर्थ रहेंगी। व्यापारिक कार्यों में आपकी गहनरूचि रहेगी तथा मुख्य रूप से इसी को अपने आजीविका साधन में उपयोग करेंगी। आपका हृदय दया एवं करूणा के भाव से सदैव परिपूर्ण रहेगा तथा कृपापात्र लोगों के ऊपर आपकी हमेशा कृपादृष्टि रहेगी। अपने सम्भाषण में आप हमेशा मधुर वाणी का उपयोग करेंगी फलतः सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृति भी धार्मिक रहेगी तथा धर्म के नियमों का आप निष्ठापूर्वक पालन करेंगी।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

आप जीवन में हमेशा देवता तथा ब्राहमणों के प्रिय कार्य को करने वाले होंगे एवं इनके प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। आप अपने जीवन में समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी तथा धन ऐश्वर्य एवं वैभव से सदैव परिपूर्ण रहेंगी। आप जीवन में कभी भी इनके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। लेकिन आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी तथा तीव्रता की इसमे अल्पता रहेगी।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय एवं मनोहारी होगी तथा आपके सौन्दर्य से सभी लोग प्रभावित रहेंगे एवं आपकी सुन्दरता की प्रशंसा करेंगे। आपका मुखमंडल तेज से हमेशा प्रकाशित रहेगा एवं समाज के अन्य पुरूषों से भी आपके घनिष्ठ मैत्री संबंध स्थापित रहेंगे तथा उनसे पूर्ण आदर तथा सम्मान की आपको प्राप्ति होगी। आपका हृदय अधिकांश प्रसन्न रहेगा तथा दुःखानुभूति कभी कभी ही करेंगी। इसके अतिरिक्त आप राज्य या सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन प्राप्त करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में उसका उपभोग करेंगी।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।

स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

आप नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक अध्ययन करेंगी तथा उनका ज्ञान प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगी। अतः समाज में एक विदुषी के रूप में आपका सम्मान होगा। आप एक धर्मनिष्ठ महिला होंगी तथा आजीवन धर्म संबंधी नियमों के पालन करने में तत्पर रहेंगी। साथ ही पुरूष वर्ग में आप अति प्रिय रहेंगी। आप अच्छे चाल चलन से युक्त सुशील स्वभाव वाली महिला होंगी तथा देवताओं के प्रति आपके मन में भक्ति भावना हमेशा विद्यमान रहेगी तथा आपके स्वभाव में कृपणता भी कभी कभी स्पष्ट रूप से दृष्टि गोचर होगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

आप स्वर्ण पाद में पैदा हुई हैं। स्वर्ण पाद में पैदा होने के कारण जातक कई प्रकार से जीवन में दुःख एवं कष्ट प्राप्त करता है तथा इसमें उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता एवं धनाभाव से भी नित्य दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में उसे सुखसंसाधनों की भी अल्पता रहती है। जिससे उसके मन में नित्य तनाव व्याप्त रहता है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्याधिक परिश्रम के द्वारा ही सफलता अर्जित हो सकती है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ वर्ग में स्थित है। अतः इससे आपको अशुभ फल अल्प तथा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

अतः आप जीवन में सम्पूर्ण सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य एवं नौकर चाकरों से भी आप सम्पन्न रहेंगी। आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा एक धनवान महिला के रूप में समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से भी सुशोभित रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आपके पति तथा पुत्र भी सुन्दर गुणवान एवं सम्मानित रहोंगे। साथ ही सेवक गण भी गुणसम्पन्न होंगे। आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आपके लिए लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि सुख को आप प्राप्त करने में भी सौभाग्यशाली रहेंगी।

तुला राशि में पैदा होने के कारण आप शरीर तथा मुख से सुन्दर रहेंगी। आपकी आखें भी बड़ी बड़ी होगी तथा नाक ऊंची होगी। आप अपने जीवन काल में बहुत से वाहनों से

सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही आप वाहन तथा भूमि आदि से शक्तिशाली एवं धनवान रहेंगी। आप के पराक्रम का प्रभाव समाज में पूर्ण रूपेण व्याप्त रहेगा सभी लोग आपको आदर प्रदान करेंगे। धनैश्वर्य एवं वैभव से आप सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगी तथा पति को वश में करने में आप दक्ष रहेंगी। आपकी आज्ञा के बिना वे कोई भी कार्य नहीं करेंगे। आप सक्रिय होगी तथा कई कार्यों को करने की क्षमता आपमें विद्यमान रहेगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धाभाव रहेगा। आप धनसंग्रह करने में भी तत्पर रहेंगी तथा बन्धु वर्ग का आप पूर्ण सहयोग तथा भलाई के लिए कार्य करती रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देवता, ब्राहमण तथा सज्जनपुरूषों की सेवा में सर्वदा तत्पर रहेंगी एवं आप एक श्रेष्ठ विदुषी होकर पवित्रता पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगी। आपकी रूचि घूमने तथा भ्रमण करने में रत रहेगी तथा अपने अधिकांश समय को यात्रा एवं भ्रमणादि में ही व्यतीत करेंगी। वस्तुओं के खरीदने तथा बेचने के कार्य में आप कुशल होगी। आपका शरीर भी यदा कदा व्याधि ग्रस्त रहेगा। आप यत्नपूर्वक बन्धु वर्ग की भलाई करेंगी परन्तु बाद में उन्हीं लोगों के द्वारा आप भी होंगी।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली महिला होगी तथा अपने अधिकांश कार्यो को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। आप न्याय के प्रति अति संवेदनशील रहेंगी। आपकी न्याय के प्रति आस्था को देखकर अन्य जन भी अपने विवादों के समाधान के लिए आपको मध्यस्थ या पंच नियुक्त करने का आग्रह करेंगे। आप भी इसे सहर्ष स्वीकार करेंगी तथा ईमानदारी से अपने कार्य को पूर्ण करेंगी। आपकी कन्या की अपेक्षा पुत्रों की संख्या भी अल्प मात्रा में ही होगी एवं भाग्योदय भी काफी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

शारीरिक कद आपका मध्यम रहेगा तथा सरकारी उच्चाधिकारी वर्ग को प्रसन्न करने में आप हमेशा निपुण रहेंगी इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही

अपने सम्बन्धियों तथा भाई बन्धुओं को समय समय पर कुछ न कुछ अवश्य प्रदान करती रहेंगी परन्तु कभी कभी आप अनावश्यक रूप से अधिक बोलेंगी जिससे लोगों पर आपके प्रभाव में न्यूनता आएंगी। ज्योतिष शास्त्र अथवा ग्रह नक्षत्रों के विषय का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग तथा सेवकों के प्रति आपका व्यवहार स्नेह से युक्त रहेगा

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप कुअवसर पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगी इससे आपको कष्टानुभूति होगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही कोमल एवं मधुरता से युक्त होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। आपके मन में दया का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा दीन दुःखियों की समय समय पर आप सहायता करती रहेंगी। आप के नेत्रों में चंचलता का भाव भी परिलक्षित होता रहेगा। आप घर के अन्दर बलवान तथा बाहर निकलकर निर्बलता का आभास करेंगी। व्यापारिक कार्यों में आप चतुर रहेंगी तथा इसमें सफल भी होंगी आप मित्रों की भी प्रिय रहेंगी तथा विदेश में भी निवास कर सकेंगी। आपके पास धनागम में भी अस्थिरता हमेशा बनी रहेगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप जीवन में वाहनादि से हमेशा युक्त रहेंगी तथा मन से दानशील रहेंगी जिसका प्रदर्शन आप समय समय पर पूर्ण रूपेण करती रहेंगी। अन्य सामाजिक जनों से भी आपका मैत्री पूर्ण संबंध रहेगे तथा मित्रों के प्रति पूर्ण स्नेहशील रहेंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर तथा प्रिय होगी जो सुनने वाले को अच्छी लगेगी। आप की बुद्धि निर्मल तथा सादगी से युक्त रहेगी। आप अपने विचारों को अत्यन्त ही सादगी पूर्ण ढंग से व्यक्त करेंगी तथा अन्य के विचारों को भी इसी प्रकार ग्रहण करेंगी। आप को अल्प मात्रा में भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर एवं प्रियकर लगेगा। गुणों के विषय में आपका विषद् ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी महान विद्वानों द्वारा वर्णित सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य वैभव तथा धन से भी आप युक्त रहेंगी तथा

उनका जीवन में आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगी।

आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा दानशीलता की भावना भी आपके अर्न्तमन में सर्वदा विद्यमान रहेगी। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा स्वभाव सादगी पूर्ण रहेगा। अनावश्यक भौतिक प्रभावों से आप दूर ही रहेंगी। साथ ही आप समाज में एक विदुषी महिला होंगी

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप विवाद तथा लड़ाई झगड़े में अधिकांश रूप से विजय प्राप्त करेंगी। आप स्वयं भी साहसी होंगी तथा साहसपूर्ण कार्यों को करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी। आपकी संतति संख्या अधिक रहेगी। साथ ही आपकी प्रकृति में वायु की प्रधानता रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी लेकिन आपकी बुद्धि में तीक्ष्णता का अभाव रहेगा।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य

अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्लयोग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्लयोग में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर एवं मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान या अन्य शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, चावल, दूध इत्यादि पदार्थो का किसी योग्य पात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।